भजन

तेरी महफिल में आए हैं,दौर एक और हो जाये
मगर यह अर्ज है रूहों की जो पहले मान ली जाए
साहेबी छोड़ के तू साहेब मेरा आशिक बन जाये

1- पी रहे थे के हम प्रीतम जाम का स्वाद है बदला
बेखुदी में थे हम प्रीतम मगर ये दिल है अब संभला
संभल के पीना भी कोई पीना नहीं हाय पीना नहीं
पिला इतनी कि ए प्रीतम,बात हद से गुजर जाए

2- लाड तो बहुत किए प्रीतम,कमी कोई नहीं बाकी
पिलाए लाड कर कर के,मिला ऐसा मुझे साकी
साहेबी में है जब इतना नशा हाय इतना नशा
तो खिलवत में फिर होगा क्या,जुबां से कैसे बतलाए

3- जो आशिक हैं दिया तेरे,न वो तो ऐसे घबरायें
खलड़ी उतरे तो क्या परवाह,
तिल तिल कर करके मर जायें
राजी हैं हम जैसी तेरी रजा जैसे तेरी रजा
देर इतनी न हो प्रीतम,कि मेरा दम निकल जाये